विश्व न्याय मंदिर

1 जनवरी 2022

सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को संबोधित

परम प्रिय मित्रों,

रिजवान 2021 में समाप्त हुई पच्चीस वर्ष की अवधि के दौरान, सेवा के लिए मित्रों की क्षमता बढ़ाने में मदद करने के प्रशिक्षण संस्थानों के प्रयास, प्रगति के केंद्र में थे। जब, वैश्विक योजनाओं की पिछली श्रृंखला के प्रारम्भ में, हमने बड़ी संख्या में अनुयायियों को प्रशिक्षित करने के तरीकों को विकसित करने हेतु व्यवस्थित ध्यान देने के लिए कहा, संस्थानों को अपनी सामग्री विकसित करने या आसानी से उपलब्ध सामग्रियों में से चयन करने के कार्य का सामना करना पड़ा। सामान्य तौर पर, संस्थानों ने नई सामग्री विकसित करना चुनौतीपूर्ण पाया; हालाँकि, जिन्होंने रूही संस्थान द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रमों को अपनाया, वे तेजी से प्रगति कर पाये। इसलिए, जैसा कि 28 दिसंबर 2005 के हमारे संदेश में आपसे कहा गया था, हमने निर्धारित किया कि रूही संस्थान की पुस्तकें, जो तब तक अपनी प्रभावशीलता सिद्ध कर चुकी थीं, कम से कम उस श्रृंखला की शेष योजनाओं के लिए हर जगह संस्थानों के पाठ्यक्रमों का मुख्य अनुक्रम होंगी। इन पाठ्यक्रमों के व्यापक उपयोग के साथ-साथ बच्चों और किशोरों की आध्यात्मिक शिक्षा हेतु पाठों और पाठ्य सामग्री ने विश्व भर में संस्थान की प्रक्रिया के विकास को आगे गति दी। अब, जब बहाई विश्व ने वैश्विक योजनाओं की एक नई श्रृंखला शुरू की है, हमने प्रशिक्षण संस्थानों की सामग्री के प्रश्न पर फिर से विचार किया है और अपने निष्कर्ष बताना चाहते हैं।

रूही संस्थान के पाठ्यक्रमों में सेवा के लिए ज्ञान और अंतर्दृष्टि, आध्यात्मिक गुण और अभिवृत्तियाँ, कौशल और योग्यताएं बहाई समुदायों के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण बना रहा है। इसलिए, ये सामग्रियां वैश्विक योजनाओं की इस नई श्रृंखला के दौरान सभी प्रशिक्षण संस्थानों के शैक्षिक प्रयासों की एक प्रमुख विशेषता बनी रहेंगी। हम जानते हैं कि रूही संस्थान, नौ वर्ष की योजना के दौरान, बच्चों की कक्षाओं, किशोर समूहों और अध्ययनवृत कक्षाओं में उपयोग के लिए स्वयं द्वारा तय की गई सभी सामग्रियों को तैयार करने और अनुभव के आलोक में आवश्यकतानुसार प्रकाशित संस्करणों को परिशोधित करना चाहेगा। हालांकि, जो पहले से ही निश्चित किया जा चुका है, उससे परे, विश्व भर में उपयोग की जाने वाली नई सामग्रियों को विकसित करने की अपेक्षा नहीं है।

सलाहकार मण्डल सदस्यों के सम्मेलन को संबोधित दिनांक 30 दिसंबर 2021 के हमारे संदेश में, हमने इस बात पर प्रकाश डाला कि विविध सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में परिश्रम कर रहे मित्रों द्वारा समुदाय निर्माण की प्रक्रिया के आयामों के संबंध में उत्पन्न किए जा रहे ज्ञान और अंतर्दृष्टि के समृद्ध भंडार का अवलोकन

करके हम कितने प्रसन्न हैं। जमीनी स्तर पर प्रयासों से स्वाभाविक रूप से उभर रही विकास से संबंधित आवश्यकताओं की पहचान करने में भी मित्र तेजी से कुशल होते जा रहे हैं। इन विकासों का शैक्षिक सामग्री को तैयार करने और सुधारने के लिए विद्यमान प्रणालियों पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार हमने निष्कर्ष निकाला है कि अब अधिक उचित होगा कि शैक्षिक सामग्री विशेष रूप से पूरक सामग्री और शाखा पाठ्यक्रम तैयार करने की क्षमता के विस्तार पर अधिक ध्यान दिया जाए।

जब हमने 12 दिसंबर 2011 के अपने संदेश में बच्चों और किशोरों की शिक्षा के लिए सामग्री के सवाल को संबोधित किया, तो हमने संकेत दिया था कि, इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम की मुख्य सामग्री से परे, शिक्षक और अनुप्रेरक, अक्सर क्लस्टर स्तर पर संस्थान समन्वयक के परामर्श से, यह निर्धारित करते हैं कि शैक्षिक प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए अतिरिक्त तत्वों की आवश्यकता है या नहीं। बड़ी संख्या में बच्चों और किशोरों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के संबंध में विश्व के अनेक भागों में हुई प्रभावशाली प्रगति तथा निश्चित रूप से शिक्षकों और अनुप्रेरकों की बढ़ती क्षमता ने पाठों और पाठ्य सामग्री के अध्ययन को विवेकपूर्ण ढंग से पूरक करने के लिए विशिष्ट परिस्थितियाँ के अनुसार उपयुक्त तत्वों को शामिल किया है। इस संबंध में कलात्मक गतिविधि और सेवा परियोजनाओं से संबंधित तत्व उल्लेखनीय हैं। फिर भी, जब किसी देश या क्षेत्र में किसी विशेष विषय के अध्ययन को पूरक करने की आवश्यकता महसूस की गई है, तो कुछ संस्थानों ने स्वयं अतिरिक्त सामग्री विकसित की है या अपनाई है, और उन्हें अधिक व्यापक रूप से प्रसारित करने की व्यवस्था की है। अधिकांश भाग के लिए इस तरह की पूरक सामग्री, साधारण तत्व रही है; जिनमें हैं, गीत या कहानियाँ। पाठ्यक्रमों के मुख्य अनुक्रम के संबंध में भी इसी प्रकार का अनुभव सामने आ रहा है, हालांकि कुछ संस्थानों ने इस संबंध में जो अतिरिक्त सामग्री उपयोग की है, जिसमें विशिष्ट विषयों पर बहाई लेखन से संकलन और प्रासंगिक अनुभव की केस स्टडी शामिल हैं, वह अधिक जटिल प्रवृत्ति की होती हैं।

क्लस्टरों की बढ़ती संख्या में आध्यात्मिक शिक्षा की एक जीवंत प्रक्रिया के फलने-फूलने के लिए संस्थानों को उपयुक्त पूरक तत्वों का उपयोग प्रारम्भ करने के निरीक्षण हेतु एक भली भांति विकसित क्षमता की आवश्यकता होगी। इसमें संस्थानों को शैक्षिक प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के साथ-साथ इसकी अखंडता को बनाए रखने के लिए भी अवश्य ही उतना ही चिंतित होना चाहिए। इस प्रकार उन्हें हमारे 12 दिसंबर 2011 के संदेश में निर्धारित विभिन्न सावधानियों को ध्यान में रखना होगा। वे निश्चित रूप से, कई तरह के अतिरिक्त तत्वों की अधिकता के दबाव से भी मित्रों को बचाना चाहिए, जो अनजाने में प्रमुख सामग्रियों की प्रभावकारिता से विमुख कर सकते हैं।

शाखा पाठ्यक्रमों के संबंध में, वे कैसे उभरेंगे, यह उन देशों और क्षेत्रों में सामने आ रही गतिशीलता के संदर्भ में समझा जाना चाहिए जहां समुदाय-निर्माण की प्रक्रिया तीव्रता के साथ आगे बढ़ रही है। जैसे-जैसे और अधिक मित्र संस्थान पाठ्यक्रमों से उभरती विभिन्न गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं, इन गतिविधियों में से प्रत्येक से सम्बद्ध सीखने के विशिष्ट क्षेत्र जनसमुदाय के जीवन में निरंतर आकार लेते हैं।

सीखने के इन क्षेत्रों में से कुछ, जैसे सामूहिक उपासना, दृढ़ीकरण और शिक्षण से संबंधित, क्षेत्रीय शिक्षण समितियों (क्लस्टर विकास समितियों) द्वारा मदद पाते हैं, जबकि अन्य, बच्चों, किशोरों, युवाओं और वयस्कों की आध्यात्मिक शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण संस्थान द्वारा बढ़ावा पाते हैं। जब अधिक से अधिक लोग संस्थान की श्रृंखला के उच्च पाठ्यक्रमों का अध्ययन करते हैं, अन्य एजेंसियों द्वारा समर्थित सीखने के अतिरिक्त क्षेत्र भी धीरे-धीरे सामने आते हैं। जैसे जैसे इन क्षेत्रों में से प्रत्येक में प्रयासों को मित्रों की बढ़ती संख्या द्वारा निरंतर बनाए रखा जाता है, नई अंतर्दृष्टियां उत्पन्न होती हैं जो इसलिए विशिष्ट होती हैं, क्योंकि वे एक खास सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में किए गए व्यवस्थित प्रयासों से उत्पन्न होती हैं। इस बात की समझ बढ़ रही है कि समुदाय-निर्माण प्रक्रिया के किसी पक्ष को आगे बढ़ाने के लिए किन अन्य अवधारणाओं, तरीकों, योग्यताओं और अभिवृत्तियों की आवश्यकता है। प्राप्त किए गए अनुभव पर परामर्श और समीक्षा करने के लिए आयोजित आवधिक बैठकों में ये वार्तालाप का विषय बन जाते हैं। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यक्तियों या संस्थानों और एजेंसियों की पहल के अलावा, संस्थान ऊपर बताए गए पूरक सामग्री के उपयोग को बढ़ावा देने का निर्णय ले सकता है। समय के साथ, जो सीखा जाता है, वह प्रभुधर्म की संस्थाओं और एजेंसियों द्वारा विभिन्न प्रपत्रों, विवरणात्मक वृतांत और केस स्टडीज में सम्मिलित किया जाता है, जो अपनी समग्रता में, अनावृत होते अनुभव का एक लेखा जोखा है। जब ज्ञान का एक बड़ा भंडार जमा हो जाता है, तो शाखा पाठ्यक्रम विकसित करके इसे और आगे व्यवस्थित करना संभव हो जाता है।

हमने पूर्व में मुख्य अनुक्रम की तुलना एक वृक्ष के तने से की है, जो उससे शाखाओं में बंटने वाले अन्य पाठ्यक्रमों की मदद करता है, प्रत्येक शाखा कार्य के कुछ विशिष्ट क्षेत्र को संबोधित करती है। ऐसे शाखा पाठ्यक्रमों की तैयारी, समय के साथ कार्य और समीक्षा द्वारा चिह्नित एक पैटर्न के माध्यम से होती है और जिसमें अवधारणा निर्माण और गतिविधि जमीन पर साथ-साथ चलती है। वे प्रशिक्षण संस्थान जो इस कार्य को करने का बीड़ा उठाते हैं, उनके लिए अनेक आवश्यकताएँ हैं। उन्हें संस्थान के मुख्य अनुक्रम की सामग्री और इसमें शामिल शैक्षणिक सिद्धांतों को गहराई से समझने, गतिविधियों के आगे बढ़ने पर जमीनी स्तर पर उत्पन्न होने वाले अनुभव का स्पष्ट रूप से विश्लेषण करने, समुदाय-निर्माण प्रक्रिया के विशिष्ट पक्षों की प्रगति के लिए समर्पित मित्रों की टीमों के साथ सहयोग करने, सीखने की विधा में काम करने, और सामग्री तैयार करने के लिए आवश्यक क्षमताओं वाले व्यक्तियों को अपने काम में शामिल करने में सक्षम होने की आवश्यकता होगी। एक बार स्थापित हो जाने पर, शाखा पाठ्यक्रम संबंधित गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए मित्रों की क्षमता को और मजबूत करने में मदद करेगा, और यह जनसमुदाय के जीवन में सीखने की संबंधित प्रक्रिया को विस्तारित करने में योगदान देगा। पाठ्यक्रम अर्जित ज्ञान के भंडार और इसके प्रसार के साधन के रूप में भी काम करेगा।

इस प्रकार की सामग्री विकसित करना एक जटिल कार्य है, और निश्चय ही यह लक्ष्य नहीं है कि प्रत्येक प्रशिक्षण संस्थान अपने स्वयं के शाखा पाठ्यक्रम विकसित करे। प्रशिक्षण संस्थान, राष्ट्रीय सभा और सलाहकारों के परामर्श से, यह निर्धारित करेंगे कि इस तरह की अतिरिक्त शैक्षिक सामग्री को विकसित करने या अपनाने का उपयुक्त समय कब है। कई संस्थान अन्य संस्थानों द्वारा विकसित प्रभावशीलता सिद्ध हो चुके पाठ्यक्रमों में से अपनी आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त शाखा पाठ्यक्रमों का चयन कर लेंगे। शाखा पाठ्यक्रमों से परे, यह अपेक्षा की जाती है कि संस्थान भविष्य में अन्य प्रकार के पाठ्यक्रम तैयार करेंगे या अपनाएंगे, जिन्हें किसी प्रकार मुख्य अनुक्रम में जोड़ा या अलग से उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए, स्वाभाविक रूप से, संस्थानों को और भी अधिक क्षमता हासिल करने की आवश्यकता होगी। हालांकि, अपने प्रयासों के दूरगामी प्रभावों के बावजूद, संस्थानों से बहाई समुदाय की सभी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने की उम्मीद नहीं की जाती है। विविध जनसमुदाय के भीतर, बड़े पैमाने पर विकास अन्य आवश्यक मांगों को संबोधित करने के लिए नए शैक्षिक उद्यमों की ओर बढ़ेगा।

हमें विश्वास है कि, जैसे-जैसे मित्र प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति को निर्मुक्त करने के लिए सभी क्षेत्रों में परिश्रम करते हैं, आने वाले वर्ष, बड़ी संख्या को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने, और ज्ञान को उत्पन्न करने, लागू करने एवं प्रसारित करने के लिए प्रशिक्षण संस्थानों की क्षमता में और आगे महत्वपूर्ण विस्तार का साक्षी बनेगा। मानव संसाधन विकास की प्रक्रिया पर नजर रखने के अपने कार्याधिकार के रूप में, हमने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र को शैक्षिक सामग्री तैयार करने की क्षमता पर निकट से नजर बनाए रखने को कहा है। यह संस्थानों की मदद करने और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रणालियाँ स्थापित करेगा कि संचित अनुभव उचित रूप से प्रसारित हों।

हम पवित्र समाधियों में आशीर्वादित सौंदर्य से याचना करेंगे कि प्रभुधर्म की ये महत्वपूर्ण एजेंसियां, प्रशिक्षण संस्थानों के परिचालन, सदैव ही उनका अमोघ आशीर्वाद और संपुष्टि प्राप्त करें।

विश्व न्याय मंदिर